अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

हिन्दुत्व के विमर्श :
चुनौतियाँ, समाधान और भविष्य

आयोजक

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

हिन्दू अध्ययन केन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

एवं

विश्व सम्वाद केन्द्र

दिनांक : 7 एवं 8 नवंबर 2025

स्थान : श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पिछले कुछ दशकों में कक्षाओं और सार्वजनिक चर्चाओं में हिन्दू धर्म पर अधिकांश चर्चाएँ यूरोपीय-अमरीकी सिद्धान्तों, मार्क्सवादी व्याख्याओं और उत्तर-औपनिवेशिक आलोचनाओं द्वारा आकार लेती रही हैं। ये दृष्टिकोण सामान्यतः एक विशाल और विविध परम्परा को सामाजिक ढांचे में भेदभाव, लिंग आधारित हिन्सा या साम्प्रदायिक संघर्ष जैसे संकीर्ण विचारों में बदल देते हैं। ऐसा करते हुए, वे उन गहन दार्शनिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत दृष्टिकोणों की उपेक्षा कर देते हैं जो धार्मिक विश्वदृष्टि का हिस्सा हैं।

इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य इन्हीं विषयों पर चर्चाओं को विस्तार देना है। इसके अन्तर्गरत धार्मिक परम्पराओं के संदर्भ में ऐसे विषयों पर चर्चा की जाएगी जैसे कि आर्य-द्रविड़ विभाजन से परे सभ्यतागत एकता की अवधारणा, सामाजिक चिन्तन में महिलाओं और परिवार का स्थान, विज्ञान और आध्यात्मिकता में पारस्परिक सम्बन्ध, तथा ऐतिहासिक देशज परम्पराओं की निरतरता। इन तथा सम्बन्धित विषयों पर विमर्श के माध्यम से आगामी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हिन्दू धर्म के विविध आयामों पर नवीन शैक्षिक सम्वाद के लिए एक मंच प्रदान करने और इन पर पुनर्विचार करने का एक प्रयास है। इसका प्रयोजन यह जानना है कि वैचारिक पूर्वाग्रहों ने वर्तमान विमर्श को किस प्रकार से स्थापित किया है। विद्वान् और विचारक इन सभी प्रश्नों पर विचार-विमर्श करने के लिए एकत्र होंगे कि विज्ञान और धर्म के बीच के सम्बन्ध को व्यापक धार्मिक परम्पराओं के प्रकाश में कैसे अध्ययन किया जा सकता है।

इस सम्मेलन का उद्देश्य हिन्दुत्व को प्रायः जिन सीमित रूपों में चित्रित किया जाता है, उन्हें चुनौती देना भी है। प्रायः इसे या तो राजनीतिक रूढ़िवादिता अथवा कठोर विचारधारा के रूप में निरस्त कर दिया जाता है। अकादमिक चिन्तन में हिन्दू धर्म को इस रूप में मान्यता नहीं दी जाती कि यह भारत की स्वदेशी परम्पराओं में निहित एक नियमबद्ध एवं नैतिक समाज की सनातन दृष्टि है।

आशा है कि यह सम्मेलन न केवल मिथ्या एवं एकपक्षीय आख्यानों का खण्डन करने का सार्थक प्रयास करेगा अपितु हिन्दुत्व-चिन्तन की समृद्धि को प्रकाशित करेगा। सभी विद्वतजन मिलजुल कर यह भी प्रदर्शित कर पाएंगे कि किस प्रकार स्वदेशी ज्ञान-प्रणालियाँ भारत के भविष्य की पुनः संकल्पना का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं।

उप-विषय:

1. आर्य आक्रमण की अवधारणा

यह विषय आर्य-द्रविड़ विभाजन को एक औपनिवेशिक निर्माण के रूप में देखता है, जिसका स्वतन्त्रता के बाद की राजनीति में उपयोग किया गया। आर्य आक्रमण जैसे सिद्धान्तों ने समाज के विखण्डन के माध्यम से भारतीय सभ्यतागत एकता का विघटन किया है। हाल के आनुवन्शिक और भाषायी अध्ययन इस विभाजन को चुनौती देते हैं, साथ ही इस विषय पर भी चर्चा होगी कि कैसे क्षेत्रीय विरोध ऐतिहासिक वास्तविकता से अधिक राजनीतिक आन्दोलनों द्वारा आकार लेते हैं।

2. हिन्दू विखंडन के षड्यंत्र

हिन्दू समाज लंबे समय से साम्प्रदायिक और क्षेत्रीय आधार पर विभाजन के प्रयासों का सामना करता रहा है। औपनिवेशिक "फूट डालो और राज करो" की रणनीतियों, धर्मप्रचार (मिशनरी) गतिविधियों और राजनीतिक लामबंदी ने इन दूरियों को और गहरा किया। यह विषय ऐसे ऐतिहासिक प्रतिमानों की पड़ताल करता हुआ विविधता का सम्मान करते हुए एकता की पुष्टि हेतु चर्चा करता है।

3. हिन्दू धर्म और नारी

हिन्दू धर्म नारी को शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करता है और उसे ऐसी प्राणशक्ति के रूप में देखता है जिसके बिना स्वयं शिव भी अधूरे हैं। हिन्दू धर्म में महिलाओं को सक्रिय आध्यात्मिक प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है; न कि केवल निष्क्रिय अनुयायी के रूप में, जैसा कि अब्राहमिक मान्यताओं में होता है। यह विषय इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे शास्त्रों और परम्पराओं ने धार्मिक विचारों में महिला सशक्तिकरण को मान्यता दी गई।।

4. वर्ण और जाति व्यवस्था

वर्ण मूल रूप से सामाजिक कर्तव्यों के विभाजन को संदर्भित करता था और बाद में जटिल जाति व्यवस्था में विकसित हुआ। व्यवहार में परिवर्तनशील होते हुए भी, औपनिवेशिक व्याख्याओं ने इसे कठोर पदानुक्रमों में जकड़ दिया। इस विषय के अन्तर्गत धार्मिक दृष्टिकोणों पर पुनर्विचार किया जाएगा, जो परम्परागत स्थिति की अपेक्षा सहयोग एवं सामाजिक सद्भाव पर बल देते हैं।

5. हिन्दू धर्म की समावेशी परम्परा

हिन्दू धर्म ने प्रारम्भ से ही आदिवासी प्रथाओं से लेकर स्थान और काल के उन्नत अध्ययन तक विविधता को अपनाया है। मौखिक परम्पराओं और बहुलवादी शिक्षा ने इसकी ज्ञान प्रणालियों को समृद्ध किया है। यह विषय इस बात की पड़ताल करता है कि समावेशिता किस प्रकार धार्मिक विश्वदृष्टि की शक्ति और लचीलापन रही है।

6. धर्म और विज्ञान

भारतीय ग्रंथों में ब्रह्माण्ड विज्ञान, गणित, चिकित्सा, चेतना आदि क्षेत्रों में अन्तर्दृष्टि का पूर्वाभास किया गया था। पश्चिमी विभाजन के विपरीत, धर्म और विज्ञान को एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखा गया है । यह विषय सत्य को समझने की वैकल्पिक पद्धतियों के रूप में प्राण, आत्मा एवं स्थिति जैसी अवधारणाओं का अन्वेषण करता है।

7. भारत उद्भूत धर्म और परम्पराएँ

भारत ने अपनी धार्मिक मूल अवधारणाओं को संरक्षित करते हुए आक्रमणों, उपनिवेशवाद और आधुनिक उथल-पुथल को सहन किया है। इसका लचीलापन उन परम्पराओं की निरन्तरता में निहित है जो अपनी पहचान खोए बिना देशकाल स्थिति के अनुसार अनुकूलित होती रही। इस विषय के अन्तर्गत यह भी अध्ययन किया जाएगा कि दर्शन, साहित्य और इतिहास में भारत की विशिष्टता कैसे व्यक्त हुई है और आज वैश्विक राजनीति में एक उभरते हुए भारत की क्या भूमिका है या होनी चाहिए।

8. आध्यात्मिक परम्पराओं में मौलिक समन्वय

हिन्दू धर्म में वेदान्त, शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध एवं जैन जैसी अनेक धाराएँ समाहित हैं। मतभेदों के उपरान्त भी मूल भावना एक ही होने के कारण इन सब का सह-अस्तित्व बना रहा। यह परिचर्चा समन्वय को एक शक्ति के रूप में प्रतिपादित करती है तथा यह अन्वेषण करती है कि व्यापक धार्मिक संरचना के अन्तर्गत साम्प्रदायिक विविधताएं किस प्रकार समन्वयपूर्वक अस्तित्व बना पाई।

9. हिन्दू धर्म एवं वैश्विक परम्पराएँ

धर्म का तात्पर्य प्रकृति के शाश्वत नियमों को स्वीकार कर जीवन का आचरण करना है। धर्म एक सनातन प्राकृतिक संरचना है, जिसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता; यह पिण्ड, पदार्थ और वस्तु का गतिशील गुण है, जिसे गुणधर्म कहा जाता है। जैसे- "धारणाद् धर्ममित्याहुः" "अथातो धर्मजिज्ञासा" "यतोभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः" "एष धर्मः सनातनः"। इन उक्तियों से स्पष्ट है कि वास्तविक धर्म और लोकप्रचलित धर्म में गहन भेद है। सम्प्रदायवादी दृष्टि ने इस अर्थ को विकृत कर अनर्थ को भी धर्म-संज्ञा दे दी। आदि गुरु शंकराचार्य ने सम्प्रदायों का समन्वय कर भारत को एक सूत्र में बद्ध किया। आज विमर्श आत्मवाद और अनात्मवाद पर केन्द्रित है, किन्तु भारतीय चिन्तन-पद्धति सदैव आत्मवादी तत्त्व को प्रधानता देती रही है।

10. कर्म-फल का सिद्धांत

कर्मफल-सिद्धान्त हिन्दू चिन्तन का गहनतम तत्त्व है, जिसे दार्शनिक एवं धार्मिक दृष्टि से परम महत्त्व प्राप्त है। कार्य-कारण भाव के अनुसार प्रत्येक कर्म का निश्चित फल होता है, और वह फल व्यक्ति को उसके कर्मानुसार ही प्राप्त होता है, यह सनातन सिद्धान्त है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र किन्तु कर्मफल पाने में परतन्त्र है, ईश्वर भी इसमें हस्तक्षेप नहीं करता। जिसे लोग भाग्य कहते हैं, वह भी पूर्वकृत कर्म ही है- "पूर्वजन्मकृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते"। कर्मवाद का उद्देश्य भाग्यवाद नहीं, अपितु कर्म द्वारा परिवर्तन है। यह सिद्धान्त आज भी दृढ़ नैतिकता के संवर्द्धन हेतु प्रासंगिक है, इस विषय पर भी गहन चर्चा होगी।

11. हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा

हिन्दू राष्ट्र के विचार को सांस्कृतिक-दार्शनिक दृष्टि और राजनीतिक अवधारणा, दोनों के रूप में समझा गया है। इस विषय के अन्तर्गत इसकी ऐतिहासिक अभिव्यक्तियों, धार्मिक सन्दर्भ में इसके अर्थ और समकालीन लोकतन्त्र में इसके स्थान का अन्वेषण किया जाएगा। इसमें भारत के भविष्य में इस विचार के समक्ष चुनौतियों और सम्भावनाओं पर भी विचार किया जाएगा।

12. हिन्दुत्व और पर्यावरण

हिन्दू धर्म सर्वभूतों को पवित्र मानते हुए प्रकृति एवं पर्यावरण को ईश्वर-प्रदत्त उपहार मानता है। प्राचीन काल से ही प्रकृति-पूजा इसकी परम्परा का अंग रही है। हिन्दू संस्कृति के अनुसार प्रत्येक कण में ईश्वर का वास है- "कण कण में राम हैं, न कि कण राम है"। शुक्ल यजुर्वेद का मन्त्र "ईशावास्यमिदं सर्वम्" सिखाता है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, वनस्पति, पर्वत, नदी आदि सभी पूजनीय हैं। अथर्ववेद में कहा गया है- "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"। पृथिवी माता भोजन एवं आश्रय प्रदान करती है, अतः उसके प्रति असंवेदनशील होना आत्मविनाशकारी है। सभी प्राणियों का सम्मान आवश्यक है, क्योंकि वे सभी ईश्वरांश हैं।

13. हिन्दुत्व के समक्ष चुनौतियाँ

आधुनिक काल में हिन्दुत्व को जाति एवं स्त्री-विमर्श की आलोचना, वैश्वीकरण का दबाव, धर्मनिरपेक्ष ढाँचे की जटिलता, वैश्विक बाज़ार की शक्तियाँ तथा पक्षपातपूर्ण चित्रण जैसी आन्तरिक एवं बाह्य चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन तनावों से इसकी समकालीन समझ निरन्तर रूपायित हो रही है। इस विमर्श का ध्येय है कि धार्मिक चिन्तन के आलोक में रहते हुए इन समस्याओं के समाधान-मार्ग खोजे जाएँ।

14. कुटुम्ब व्यवस्था

परिवार समाज की मूलभूत इकाई है तथा अनेक परिवारों का समुदाय 'कुटुम्ब' कहलाता है। प्रत्येक कुटुम्ब की अपनी व्यवस्था एवं अनुशासन होता है। हिन्दू चिन्तन में कुटुम्ब की संकल्पना केवल सामाजिक न होकर पारमार्थिक एवं राष्ट्रहितकारी भी है। इसी हेतु वेद में "वसुधैव कुटुम्बकम्" का लक्ष्य उद्घोषित है, जो समस्त विश्व को एक परिवार मानता है। उत्तरकाल में संयुक्त परिवार को कुटुम्ब की संज्ञा दी गयी, जहाँ अनेक पीढ़ियाँ एक छत्र के अन्तर्गत संसाधन व उत्तरदायित्व सांझा करती हैं। यद्यपि आज एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है, तथापि यह सत्य है कि संयुक्त परिवार बच्चों के नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संक्षेपतः कुटुम्ब व्यवस्था एक गतिशील प्रणाली है जो व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक ताने-बाने को आकार देती है। इस दृष्टि से आधुनिक परिस्थितियों के आलोक में इस विषय पर गहन विमर्श किया जाएगा।

निष्कर्ष

यह सम्मेलन हिन्दुत्व को एक स्थिर वस्तु के रूप में नहीं, अपितु एक जीवंत एवं निरन्तर विकासशील परम्परारूपेण देखने का एक प्रयास होगा। इतिहास में अनेक सुविज्ञ जनों के अनुभवों से हिन्दू धर्म का स्वरूप निर्मित हुआ है। आगामी सम्मेलन का उद्देश्य विचारों का केवल तर्क या खण्डन करना नहीं, वरन् प्रतीकों एवं अर्थों की सूक्ष्म व्याख्या करना है। साथ ही, परम्पराओं को ऐसे व्यापक सम्वाद में रखना है जो आधुनिक चुनौतियों से जूझ सके। ऐसी आशा है कि यह सम्मेलन अकादमिक एवं सभ्यतागत विमर्श को आगे बढ़ाएगा और साथ ही यह स्मरण भी कराएगा कि धार्मिक चिन्तन में आज की समस्याओं के समाधान हेतु अभी भी अपार सम्भावनाएँ निहित हैं।

सम्मेलन प्रारूप

❖ मुख्य व्याख्यान ❖ विषयगत परिचर्चाएँ ❖ शोधपत्र प्रस्तुतियाँ ❖ सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शोध प्रदर्शनियाँ

लक्षित प्रतिभागिता

- ✓ हिन्दू अध्ययन, भारतीय ज्ञान परम्परा(IKS), संस्कृत, दर्शनशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र आदि ससम्बन्धित क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षाविद् और शोधकर्ता।
- ✓ धार्मिक और सभ्यतागत अध्ययनों में रुचि रखने वाले छात्र, शिक्षाविद् और बुद्धिजीवी।
- ✓ नीति विशेषज्ञ, सांस्कृतिक कार्यकर्ता और समकालीन सामाजिक विमर्श में सन्निहित लोग।

उद्घाटन एवं समापन सत्र – आमन्त्रित विशिष्ट अतिथि

श्री धर्मेन्द्र प्रधान

माननीय शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार

डॉ. कृष्ण गोपाल

सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रो. मुरली मनोहर पाठक

कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय

प्रो. योगेश सिंह

कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रतिभाग हेतु दिशा-निर्देश:

1. सारांश (अधिकतम 250 शब्द, फ़ॉन्ट आकार 14) ईमेल द्वारा निम्न पते पर भेजें : **hindutvavimarsh2025@slbsrsv.ac.in**
2. सारांश सम्मेलन के प्रासंगिक विषयों से संबद्ध होना चाहिए।
3. सारांश के साथ कृपया अपने विवरण (फोन नंबर एवं ईमेल सहित) अवश्य संलग्न करें।
4. सारांश स्वीकृत होने के पश्चात पूर्ण शोध-पत्र (UNICODE, फ़ॉन्ट आकार 14, 2500–3000 शब्द) प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।
5. सम्मेलन में प्रस्तुतिकरण हेतु पूर्ण शोध-पत्र का प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। पूर्ण शोध-पत्र के प्रारूप तथा अन्य विवरण सम्बन्धी दिशा-निर्देश सारांश स्वीकृत होने के बाद सांझा किए जाएंगे।
6. सभी प्रस्तुतियाँ लेखक की मौलिक तथा अप्रकाशित कृति होनी चाहिएं। 10% से अधिक प्लेज़रिज़्म पाए जाने पर शोध-पत्र अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा। जनरेटिव एआई का प्रयोग शोध-पत्र अस्वीकृत किए जाने का कारण बन सकता है।
7. चयनित शोध-पत्रों को शोध प्रभा (UGC CARE सूचीबद्ध पत्रिका) के विशेष अंक में प्रकाशित किया जाएगा।
8. किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्न पते पर संपर्क करें: **hindutvavimarsh2025@slbsrsv.ac.in**

महत्वपूर्ण तिथियाँ:

सारांश जमा करने की अंतिम तिथि	:	05 अक्टूबर 2025
सारांश स्वीकृति की सूचना	:	10 अक्टूबर 2025
पंजीकरण की अंतिम तिथि	:	30 अक्टूबर 2025
पूर्ण शोध-पत्र जमा करने की अंतिम तिथि	:	30 अक्टूबर 2025

शोध-पत्र प्रस्तुतिकरण एवं सहभागिता हेतु पंजीकरण शुल्क:

₹1000 – प्राध्यापकों एवं अन्य प्रतिभागियों के लिए

₹300 – शोधार्थियों के लिए

पंजीकरण शुल्क नीचे दिए गए QR कोड के माध्यम से जमा किया जा सकता है।

Bank: State Bank of India
Account No: 32833613139
IFSC Code: SBIN0001690
UPI: 7840818198@ptsbi

पंजीकरण लिंक:-

https://shorturl.at/3zJuW

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें:

डॉ. जीवन जोशी
+91-7840818198

श्री मुरलीशरण शुक्ल
+91-9871087374

डॉ. नरेन्द्र शर्मा
+91-9899931506